□□□□□□ □□□□□

लोकतंत्र के चुनावी मौसम में राजनीतिक दलों की ललकार और प्रपंच किस तरह प्रचंड हथकंडों पर उतरकर □क दूसरे पर पलटवार कर आक्रामक वाचक सक्रियता से अपने को शाबाशी, मुबारकबाद देने में अपनी ही छाती पीटते हैं- यह नागरिक समाज के मतदाताओं को खूब मालूम है□

हमारे विशाल राष्ट्र का संविधान □क है, हमारे राष्ट्र का कानून □क है, हमारी क्षेत्रीय विभिन्नताओं के बावजूद हमारे राष्ट्र का जनमानस □क है□ प्रादेशिक विभिन्नताओं के चलते भी नागरिक समाज के जन-मन का अंतरजगत □क है- भारतीय□ भारतीयों की संवैधानिक आकांक्षा□ं-महत्त्वाकांक्षा□ं लगभग □क दिशा की ओर उन्मुख हैं□ वह आने वाली पी□ियों के कल्याणकारी भविष्य की ओर देखती है□ इसकी यह वैचारिक बुनत संविधान द्वारा पुख्ता करने को बनाई गई थी जो देश के लोकतांत्रिक मूल्यों में प्रतिबिंबित होती है□

तंत्र जनता-जनार्दन के कल्याण के लि□ नागरिक हितों में विकासशील योजनाओं का संचार, संवार करता है□

संप्रभुतापूर्ण राष्ट्र में नागरिक परिवारों की मेहनत, परिश्रम न उन्हें मात्र स्वावलंबी बनाता है- राष्ट्र के अपार संपत्ति भंडार भी भरता है□ उसके चलते ही सत्ता तंत्र उसे अक्षुण्ण बनाने की भरसक चेष्टा□ं करता है□ लोकतांत्रिक भारत का नागरिक होने के नाते विशाल देश का कोई भी नागरिक अपने होने में न मात्र हिंदू है, न मुसलमान, न क्रिस्तान, न सिख, न पारसी और यहूदी□ इन सबमें अपने-अपने धर्मों, विश्वासों का गहरा निवास होते हु□ भी इनकी नागरिक पहचान में, संज्ञा में लोकतांत्रिक मूल्य, कर्त्तव्य और अधिकार जु□ते हैं□ लोकतांत्रिक मूल्य और सिद्धांत भी□ लोकतंत्र में जितनी राष्ट्रीय अस्मिता के रूप में नागरिक की व्यक्तिगत स्वतंत्रता है, उतनी ही उसके अनुशासनीय पालन की भी□

कोई भी समूह या राजनीतिक दल मनमाने ढंग से अपने कार्यक्रमों को सुनिश्चित कर जबरदस्ती दूसरों पर थोपना चाहे, अनुसरण करवाना चाहे तो वह राष्ट्रीय □कत्व में दरारें पैदा करेगा□ अपने देश के इतिहास में गुजरी पिछली शताब्दी का अवलोकन करें तो विभिन्न सांस्कृतिक साक्षात्कारों, संसर्गों ने भारतीय जीवन-शैली और विचार की असंख्य धारा□ं और वेग दि□ हैं□

भारतीय चेतना ने विश्व परिवार और विश्व बंधुत्व के लोकोत्तर और वैचारिक भाव दि□ हैं□ विश्व बंधुत्व की क□ी ने पुराने समयों से भारतीयता को अनोखा व्यक्तित्व प्रदान किया है□ कोई भी राजनीतिक दल भारतीय नागरिक समाज की मानसिक जलवायु को तानाशाही ढंग से नियंत्रित नहीं कर सकता□ हमारा बौद्धिक दायित्व है कि विभिन्न जातियों और तथाकथित धार्मिक पंथों का हम सांप्रदायिक ध्रुवीकरण न होने दें□ इस राजनीतिक संस्कृति के अलावा

भारत की अलिखित संस्कृति की लंबी क□ी अभी भी हमसे जु□ी है□ राष्ट्रीयता और भारत की भावनात्मक □कात्मा □क-दूसरे से गहरे तक जु□ी-बंधी है□ उसे किसी भी कीमत पर झनझनाना, उससे टकराना खतरों से खाली नहीं□ कोई भी कट्टरपंथी, ऊपर से उदार दिखने वाली राजनीति हमें उस तानाशाही की ओर धकेल सकती है जहां से बिना बरबादी के लौटना मुश्किल होगा□

आज विश्व भर के मानवीय परिवार अपने पुराने रहन-सहन, मूल्यों के पुराने संस्कारी ढांचे के बदलावों में से गुजर रहे हैं□ विज्ञान द्वारा दी गई तमाम सुविधाओं के चलते पुरानी जीवन-शैली बदल रही है□ भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप न□-पुराने के मिश्रण से, इसकी गतिशील रफ्तार से बाजार की व्यापार व्यवस्था का विस्तार कर रहे हैं□

ऐसे में हमारे लोकतंत्र में पनपे सामाजिक पर्यावरण को हम किस प्रदूषण से ग्रस्त कर रहे हैं□ किन नीतियों की ढिलाई के परिणामस्वरूप हमने अचानक सांप्रदायिकता और पुराने जातिवाद का पल□ा भारी किया है□ अपने-अपने शक्ति गलियारों को अपराधीकरण से लैस कर □क ऐसी राजनीतिक संस्कृति के मठ बना□ हैं जो लोकतांत्रिक मूल्यों से अलग और आगे अपने-अपने जाति समूह, कुल-गोत्र के संकीर्ण स्वार्थों में अपने महाबली होने के दंभ को डंके की चोट पर बजाते, भुनाते हैं और अपने गुप्त खजानों को भरते हैं□

क्या हमारे लोकतांत्रिक स्थापत्य में राजनैतिक संस्कृति की यही परिभाषा है□ क्या हिंसक बिचौलि□ ही उनकी सुरक्षा को तैनात रहेंगे□ हकीकत यह है कि इन सीमाओं के बाहर भी □क ब□ा नागरिक समाज मौजूद है जो लोकतंत्र के कल्याणकारी नीति-नियमों से जीवन में समृद्धि लाना चाहता है□ वह धार्मिक उन्माद में नहीं जीता□ वह भारत देश के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक गुथीले धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने का आख्यान जानता है□ उसकी पी□ियों ने इस विरासत को जिया है□

यह सत्य किसी विचारधारा से आरोपित नहीं, राष्ट्र के नागरिक समाज के यथार्थ से जु□ा है□ लोकतंत्र में अगर हम किसी भी राजनैतिक दल के सत्ता शासन से आतंकित हैं तो उन्हें बदलने का अधिकार हमें है□ लोकतंत्र की मर्यादा मतदान में सुरक्षित है और ‘लोक’ के कल्याण की न्यायपालिका में□